ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-6* July- 2021
Innovation The Research Concept

आयुर्वेद : एक निषिद्ध विज्ञान

Ayurveda : A Forbidden Science

Paper Submission: 15/07/2021, Date of Acceptance: 25/07/2020, Date of Publication: 26/07/2021

राजेश्वर सिंह
सह आचार्य,
विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र विभाग,
बी.आर.ए.बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश

प्राचीन भारतीय परम्परा में आयुर्वेद की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऋग्वेद काल में चिकित्सा विज्ञान की भूरी–भूरी प्रशंसा की गयी। किन्तु यजुर्वेद काल से इसे पूर्णतया निषिद्ध मान लिया गया। चिकित्सा पद्धति के प्रति इस प्रकार का निषेध–भाव के पीछे कर्मकाण्ड में विश्वास करने वाले पुरोहितों का हाथ प्रतीत होता है। वस्तुतः कर्मकाण्ड से होने वाली कमाई के बन्द होने का भय एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है।

The role of Ayurveda in ancient Indian tradition is very important. Medical science was widely praised in the Rigveda period. But from Yajurveda period it was considered prohibited. Behind this type of prohibition towards the medical system, the priests who believe in rituals seem to have a hand. In fact, the fear of loss of their earnings from rituals can be an important reason.

मुख्य शब्द : ऋग्वेद, यजुर्वेद, पुरोहित, कर्मकाण्ड, चिकित्सा विज्ञान, निषिद्ध।
Rigveda, yajurveda, Priest, Rituals, Medical Science, Forbidden

प्रस्तावना

ऋग्वेद के उत्तरकालीन परिस्थितियों ने भारतीय चिकित्सा पद्धति को पूर्णतया अवगुण्ठित एवं अवरूद्ध कर रखा है। विज्ञान के प्रति यह उपेक्षा भाव भारतीय जनमानस को पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति के प्रति मुखापेक्षी बना दिया किन्तु काल के प्रवाह ने आज कोरोना काल की विभीषिका के मध्य प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति की श्लाधनीयता को पुर्नस्थापित कर दिया।

अध्ययन का उद्देश्य

प्राचीन चिकित्सा विज्ञान के विकास को अवरूद्ध करने वाली कर्मकाण्डीय मान्यताओं की आलोचनात्मक पड़ताल प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

विषय–विस्तार

पारलौकिक शक्ति की संजीवनी से पोषित सनातन विचारधारा के विकास गंगा की गहनता को काल के कलेवर के निरंतर प्रवाह में अवगाहन कर विश्व स्वास्थ्य एवं कल्याण की भावना को स्थापित किया जा सकता है। इसकी आध्यात्मिक अंतःचेतना आज भी अजर–अमर है, शाश्वत सत्य से अनुरंजित, पुनीत आशीष एवं विश्व शांति वरदायिनी शुचिता से अभिसिक्त है। सम्पूर्ण मानवता के वरदान स्वरूप वेद अद्वितीय ज्ञान रश्मियों के हीरक हार के रूप में सनातन परम्परा की सुन्दर ग्रीवा में सुशोभित है। इसका महासंदेश है– '

''सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत।।''

वृहदारण्यक उपनिषद का यह संदेश विश्व मानव के लिए सुख, स्वास्थ्य एवं सर्वविध कल्याण की कामना करता है।

वेद मानव जीवन के अत्यंत प्राचीन अभिलेख हैं। ऋग्वेद में इलाज करने वालों की काफी प्रशंसा की गई है। अनेक देवताओं की उनके चिकित्सा सामर्थ्य के कारण स्तुति की गई है, जैसे–रुद्र की स्तुति करते हुए कहा गया हैः हे रुद्र, हमारे पुत्रों को औषधि द्वारा परिपुष्ट करो। मैंने सुना है कि तुम वैद्यों में सर्वश्रेष्ठ हो।[1] सोम की स्तुति में कहा गया है : हे सोम, तुम इस विश्व में बीमारों का इलाज करने वाले हो[2]– ''भिषक्ति विश्वं यत्तुरम्''। इसी तरह मरुत,[3] एवं विश्वदेवों[4] की स्तुति में भी उनके द्वारा प्रदत्त औषधियों की चर्चा की गई है। देवताओं तक की बीमारियों का इलाज करने वाले अश्विनद्वय को तो चिकित्सा के निराले देवता माना गया। ऋग्वेद कहता है ' दिव्य वैद्य (भिषक्) अश्विनद्वय हमारा मंगल करें–

'उत त्या दैव्या भिषजा शं न :
करतो अश्विना' – (ऋ. 8/18/8)

इस प्रकार ऋग्वेद के काल में चिकित्सा कार्य को अत्यंत प्रशंसनीय कार्य माना गया। चिकित्सा कार्य में दक्ष अश्विनी कुमारों को इन्द्रादि देवताओं के समकक्ष दर्जा प्राप्त था– 'हे अश्विनद्वय, तुम इस यज्ञ में तैंतीस देवताओं, मरुतों और भृगुओं के साथ सोम पान करो'

'विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहादभिर्मरुद्भिर्भृगुभिःसचाभुवा'
(ऋ. 8/35/3)

किन्तु ऋग्वेद से यजुर्वेद तक आते–आते चिकित्सा कार्य को अत्यंत निन्दनीय माना जाने लगा। चिकित्सा के देवता अश्विनी कुमारों का बहिष्कार कर दिया गया। अब उन्हें यज्ञों में आहुति नहीं दी जाती थी। प्रश्न है कि जीवनदान देने वाले चिकित्सकों के प्रति बहिष्कार भाव का उदय आखिर क्यों और कैसे हुआ? इसकी पूरी पड़ताल आवश्यक है। यजुर्वेद का कहना है कि चिकित्सा करने वाले देवता अश्विन कुमार आम जनता में जाते हैं और हर छूत–अछूत की चिकित्सा करते हैं, अतः वे अपवित्र हैं। अपवित्र होने के कारण ब्राह्मणों को चिकित्सा कार्य कदापि नहीं करना चाहिए।

'तस्मात ब्राह्मणेन भेषज न कार्यम'[5]

शुक्ल यजुर्वेद के व्याख्या ग्रन्थ शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख है कि अश्विनी कुमारों द्वारा बार–बार अपना यज्ञ–भाग मांगने पर देवताओं ने कहा– ''हम तुम्हारा आह्वान नहीं करेंगे, तुम्हें आदर से नहीं पुकारेंगे क्योंकि तुम घुमते रहे हो, आम लोगों से घुलते–मिलते रहे हो और इलाज करते रहे हो''।[8]

स्वाभाविक है कि चिकित्सक को हर आदमी के पास जाना पड़ेगा, ऊंच–नीच का ध्यान किए बिना उसे सबकी सहायता करनी पड़ेगी। इस सर्वजन समभाव को यजुर्वेदीय पुरोहितों ने पसंद नहीं किया और चिकित्सा के देवता को अछूत घोषित करने के साथ ही चिकित्सा के प्रति अभिरुचि रखने वाले तत्कालीन बौद्धिक वर्ग ब्राह्मणों को भी दण्डित करने का प्रावधान कर दिया गया। यही नहीं, चिकित्सक को बलि का पशु भी बनाया गया। यजुर्वेद में जहाँ पुरुषमेध में बलि दिए जाने वाले व्यक्तियों की सूची दी गई है, वहाँ लिखा है– **'पवित्राय भिषजम्'** (यजु. 30/10) अर्थात् पवित्रता के लिए भिषक् की बलि दें। तात्पर्य यह है कि यदि कोई चिकित्सा कार्य करे तो उसका वध कर दो।

इस प्रकार आयुर्विज्ञान का धार्मिक मान्यताओं द्वारा गला घोटा गया। जानलेवा विरोध के बावजूद लोगों ने बीमारियों से छुटकारा पाने के प्रयास जारी रखा। ऋषि अथर्वा के वंशजों ने इस दिशा में प्रयास जारी रखा। फलतः अथर्वा और उसके वंशजों का बहिष्कार किया गया। उनके द्वारा संगृहित अथर्ववेद को 'वेद' ही नहीं स्वीकार किया गया।

विष्णुधर्मसूत्र (विष्णुस्मृति) ने अथर्वा के वंशजों द्वारा प्रवर्तित जड़ों आदि से उपचार को निषिद्ध घोषित किया– **''मूलक्रियास्वनभिरतिः''** (25/7) अर्थात् जड़ों से इलाज करने में रूचि नहीं रखनी चाहिए। मनु ने जड़ों से उपचार को गोहत्या के समान (उपपातक) घोषित किया।[7] जड़ों से उपचार का ही निषेध नहीं किया गया, बल्कि चिकित्सक को भी अत्यंत अपवित्र और निन्दनीय माना गया। **'पूयं चिकित्सकस्यान्नम्' (मनु. 4/220)** अर्थात् चिकित्सा करने वाले का अन्न पीब के समान है, अतः ग्राह्य नहीं।[8]

अत्रि संहिता तो यहाँ तक घोषणा करती है कि **'वैद्यों चतुविप्रा न पूज्यन्ते बृहस्पतिसमा यदि'** अर्थात् वैद्य आदि ब्राह्मणों का सत्कार नहीं करना चाहिए, चाहे वे बृहस्पति के समान ही विद्वान् क्यों न हो।[9] मनु और महाभारत दोनों का मानना है कि[10] **''भिषजे पूयशोणितम''** अर्थात् श्राद्ध में यदि चिकित्सा करने वाले ब्राह्मण को भोजन कराया जाय तो उसे खिलाया गया अन्न पितरों के लिए पीब और रक्त के समान हो जाता है। उशना स्मृति का कहना है कि ब्राह्मण पुरुष एवं वैश्य स्त्री के गुप्त संबंधों से उत्पन्न (समाज का अत्यंत निन्दनीय व्यक्ति) अम्बष्ठ ही चिकित्सा कार्य को आजीविका के रूप में अपना सकता है। **''ब्रह्मणाद् वैश्यायामम्बष्ठः, हि अंबष्ठा शल्यजीविनः''[11]**

चिकित्सा और चिकित्सक के प्रति दुर्भाव को वैदिक परम्परा के कवियों[12] तक ने सूक्तियों में पद्यबद्ध कर आम आदमी के मन में उसे बैठाने की पूरी कोशिश की – ''**वैद्यराज नमस्तुभ्यं यमराज सहोदर, यमो हरति वै प्राणानत्वं प्राणान् धनानि च''** अर्थात् हे वैद्य, तुम यमराज के भी बड़े भाई हो। तुम्हें दूर से ही नमस्कार। यम तो केवल प्राणों को हरता है, लेकिन तुम प्राणों के साथ–साथ धन को भी हरते हो।

चिकित्सा एवं चिकित्सकों के प्रति कर्मकाण्डिया का उक्त नकारात्मक भाव वैज्ञानिक विकास को इस तरह अवरुद्ध एवं अवगुण्ठित किया कि अज्ञानजन्य अन्धविश्वासों से हम अद्यावत् मुक्त नहीं हो सके हैं।

इस बात से थोड़ा संतोष होता है कि हिन्दू धर्मशास्त्रों द्वारा जोरदार विरोध के बावजूद अश्विन कुमारों द्वारा प्रवर्तित एवं ऋषि अथर्वा द्वारा प्रचारित आयुर्विज्ञान की परम्परा को कुछ अन्तराल के बाद अवैदिक चिन्तकों द्वारा जिसमें व्रात्य, चार्वाक एवं बौद्ध आते हैं, पूर्ण समर्थन एवं संरक्षण प्राप्त हुआ। इस परम्परा ने आयुर्विज्ञान का विरोध करने वाले पुरोहितों का उन्हीं की भाषा में उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया

पुरीषस्य च रोषस्य हिंसायाः तस्करस्य च,
आद्याक्षराणि संगृह्य वेधाश्चक्रे पुरोहितम्।

अर्थात् पुरीष (मल), रोष (क्रोध) हिंसा और तस्कर के आदि अक्षरों को एकत्र कर के विधाता ने पुरोहित की रचना की।

पुनः जब बौद्ध क्रांति को प्रतिक्रांति द्वारा दबा दिया गया, तब पुनः पुरोहितों ने सिर उठाया और पहले से चली आ रही आयुर्विज्ञान परम्परा का मूलोच्छेद कर उसके प्रति जनरुचि नष्ट करने का हर सम्भव प्रयास किया। इसका कारण था कि चिकित्सा पुरोहितवाद के उस अन्धविश्वासजन्य महल की नींव–कर्मसिद्धान्त–पर वज्रपात करती थी, जो कहता था कि बीमारियाँ पिछले जन्म के दुष्कर्मों के दण्डस्वरूप पैदा होती हैं। गरुड़ पुराण के कई अध्यायों में बड़े विस्तार से बताया गया है कि पूर्वजन्म में कौन–सा पाप करने के दण्डस्वरूप अगले जन्म में कौन

सी बीमारी होती है।[13] चूंकि चिकित्सक औषध द्वारा इन रोगों को दूर करके 'दण्ड' में हस्तक्षेप करता था। इससे कर्मसिद्धान्त झूठा सिद्ध होता था और उस सिद्धान्त का प्रचार करने वालों की रोजी–रोटी प्रभावित होती थी। फलतः पुरोहितों ने चिकित्सकों का जोरदार विरोध किया।

अब पुरोहित की रोजी–रोटी रहे या न रहे, इससे रोगी व्यक्ति को क्या लेना–देना? पुरोहित के एड़ी–चोटी का पसीना एक करने के बावजूद जब लोग चिकित्सा से विमुख नहीं हुए तो पुरोहितों ने पैंतरा बदला। उसने दोधारी नीति अपनाई। सर्वप्रथम तो चिकित्सकों का नीच–अछूत कहकर सामाजिक बहिष्कार किया तथा दूसरा **दैव व्यपाश्रय भिषक**[14] अर्थात् अपनी पुरोहित ब्रांड चिकित्सा (निर्मल बाबा मार्का चिकित्सा) को अचूक चिकित्सा घोषित किया। दान, व्रत, तीर्थाटन तथा जपादि पुरोहित ब्रांड चिकित्सा के मुख्य नुस्खे थे। जपादि भी पुरोहित की आमदनी का साधनमात्र थे। पुरोहित ब्रांड चिकित्सा का दूसरा नुस्खा ज्योतिषशास्त्र बना। हर व्यक्ति मृत्यु से डरता है, इस भय का लाभ भी पुरोहितों ने उठाया। धर्म सिन्धु में लिखा है कि जिस–जिस नक्षत्र में रोग आरम्भ होने से मृत्यु अवश्य होती बताई गई है, उस–उस नक्षत्र की शांति अवश्य करनी चाहिए। शांति में मुख्यतः उस नक्षत्र की सोने की प्रतिमा बनानी चाहिए, उसकी पूजा करके, वह सुवर्णमूर्ति तथा एक गाय पुरोहित को दी जानी चाहिए।

येषु नक्षत्रेषु मरणमुक्तं तत्र शांतिरावश्यकी
.....नक्षत्रदेवताप्रतिमां
सौवर्णीं संपूज्य.... आचार्य प्रतिमां च दद्यात्।
– धर्म सिन्धु–तृतीय परिच्छेद

इस प्रकार पुरोहित के दोनों हाथों में मोदक था। यदि दान देने से संयोगवश कोई बच गया तो पुरोहित अपने ब्रांड की अचुकता की कहानी कहकर दूसरों को उल्टे उस्तरे से निर्विकार भाव से मूंडता। यदि दान देने वाला मर जाता, तब भी पुरोहित के लिए कोई धर्म संकट नहीं पैदा होता था। वह बड़ी ढिठाई से मृतक के संबंधियों को बताता कि अटल मृत्युयोग था। उसको कोई कैसे टाल सकता था। हाँ, हमने जो अनुष्ठान किया, मृतक ने जो दान आदि दिया है, उससे उसकी सद्गति होगी। उसे स्वर्ग में देवदुर्लभ स्थान प्राप्त होगा।

निष्कर्ष

इस तरह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में पुरोहितों ने चिकित्साशास्त्र को पैर जमाने से रोकने के लिए अनेक हथकंडे अपनाएँ। कभी चिकित्सक को नीच और अपवित्र घोषित किया गया तो कभी चिकित्सा को समाज में निंदित लोगों का पेशा बताया और बनाया गया। कभी दान–दक्षिणा के अवसर जुटाने वाले कार्यों को चिकित्सा के नाम पर प्रचारित किया गया तो कभी चिकित्सा विज्ञान पर ग्रहनक्षत्रों की मनहूस छाया डालकर उसे अन्धविश्वासों का पुंज बनाने की कोशिश की गई। इस सबका दुष्परिणाम यह हुआ कि जनता वैद्यों से चिकित्सा करवा कर भी मन में उन्हें नीच, अपवित्र और गन्दा मानती रही।

काश! हिन्दू धर्मशास्त्रकारों ने अश्विन कुमारों एवं ऋषि अथर्वा जैसे आयुर्वैज्ञानिकों, **'प्राणेनैति कलां भूः'**[15] की घोषणा से सूर्य को स्थिर एवं पृथ्वी को गतिशील बताने वाले आर्यभट्ट जैसे खगोलशास्त्रियों एवं 'परमाणु'[16] की प्रथम परिभाषा देने वाले ऋषि कणाद जैसे भौतिकशास्त्रियों (जिसे उल्लू की उपाधि से नवाजा गया) को अपमानित, बहिष्कृत एवं प्रताड़ित न किया होता तो आज हिन्दू धर्म अपनी अथाह उदारता के साथ ही साथ वैज्ञानिक वैदूष्य का परचम अखिल ब्रह्माण्ड में फहरा रहा होता। आज संतोष इस बात से होता है कि कोरोना की महाविभीषिका के मध्य आज देशज चिकित्सा पद्धति को उसका खोया सम्मान प्राप्त हो रहा है। आज आवश्यकता है इस चिकित्सा पद्धति के उन्मेष एवं अवगाहन की।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *उन्नो वीरान् अर्षय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वाभिषजां श्रृणोमि – ऋ. 2/33/4.*
2. *वही, 8/79/2.*
3. *मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः यत सिंधौ यदसिक्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः, – ऋ. 8/20/23, 25–26.*
4. *आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः, आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। ऋ. 10–137–61*
5. *ते देवा अब्रुवन्अपूतो वेमौ मनुष्यचरौ भिषजौ इति। तस्मात् ब्राह्मणेन भेषजं न कार्यम्, अपूतो ह्येषोऽमेध्यो यो भिषक्। – यजुर्वेद, तैत्तिरीय संहिता 6/4/9.*
6. *न वामुपह्वयिष्यामहे बहुमनुष्येषु संसृष्टमचारिष्टं भिषज्यन्ताविति। – शतपथ ब्राह्मण 01–4–1–5–1 से 14.*
7. *गोवधः हिंसौषधीनां स्त्र्याजीवोऽभिचारो मूलकर्म च' मनु0 11/59, 63.*
8. *महाभारत, शांतिपर्व 36/30, वसिष्ठ स्मृति 4/2, मनु0 4/212, याज्ञवल्क्य स्मृति, आचाराध्याय श्लोक – 162.*
9. *अत्रि संहिता, 387.*
10. *मनु0 3/180, महाभारत अनुशासनपर्व 90/13.*
11. *उशना स्मृति–31.*
12. *वैद्यनाथ नमस्तुभ्यं क्षपिताशेषमानव, त्वयि संन्यस्तभारोऽयं कृतान्तः सुखमेधते।। – माठरवृत्ति कारिका–1.*
13. *ब्रह्महा क्षयरोगी स्यात्, कन्याधाती भवेत्कुष्ठी, दुश्चर्मा गुरुतल्पगः।। मांसभोक्ताऽतिरक्तांग श्यावदंतस्तु मद्यपः, अभक्ष्यभक्षको लौल्याद् ब्राह्मणः स्यान्महोदरः। – गरुड़पुराण, 5/3–7.*
14. *तत्र दैवव्यपाश्रयं मंत्र औषधि मणि मंगल बलि उपहार, होम नियम प्रायश्चित तथा स्वस्त्यन प्रणिपात गमनादि।' – चरक संहिता 1/11/54.*
15. *आर्यभटीयम्, आर्या–4.*
16. *जलान्तरगते भानौ यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः। तस्य षष्ठतमो भागः परमाणुः स उच्यते।। – प्रशस्तपादभाष्य (कंदली सहित) पं0 विंध्येश्वरी प्रसाद कृत भूमिका, पृ0 7 तथा नैषध चरितम् 22/35.*